

PROF. MADAN MADHAV GODBOLE

Prof. Madan Madhav Godbole is the Professor of Molecular Medicine and Biotechnology at Sanjay Gandhi Postgraduate Institute of Medical Sciences, Lucknow a tertiary Patient Care, Academic and Research institute of national repute. Prof. Godbole is widely recognised across India for his work in the field of Iodine deficiency Disorders and its prevention and control.

2. Born on May 16, 1950, at Indore, Madhya Pradesh, Prof. Godbole received his school and college education in Gwalior. In the year 1972, he moved to Delhi and received his Doctorate degree in endocrine biochemistry from All India Institute of Medical Sciences, New Delhi in 1980.

3. Prof. Godbole was instrumental in carrying out surveys and studying patterns of iodine deficiency in India in general and state of Uttar Pradesh in particular. This research was vital to ensuring healthy iodine nutrition to allow for proper intellectual and neurological brain development of children born in Iodine deficient areas. It led to change in national policy and implementation of iodine supplement programs. He indigenously developed and validated filter paper based thyroid hormone assays for the largest cord blood based neonatal thyroid screening program launched in Tarai regions of Uttar Pradesh.

4. In addition, at SGPGIMS, he did original basic and clinical research in many areas that have been widely published and recognized. Prof. Godbole showed uncanny ability to pick up clinical observations to formulate meticulous laboratory experiments and interpretation of results within physiological limitations in mind, has resulted in significant contributions. The clinical relevance of studies due to novel findings resulted in 75 publications in high impact factor peer reviewed international journals. In a country where iodine deficiency took significant toll of mothers and their new-born, his research ensured that we had healthy babies and mothers who would become valuable assets for future economy and scientific temper in India.

5. Nurturing scientific culture in PhD students and skill enhancement in technical staff has been his forte for last four decades. He firmly believes that quality research must always translate to easily adoptable field techniques. Along with continued bench research in front line areas of medicine and public health, he is presently busy with developing miniaturized test kits for detection of iron and iodine levels in food stuffs like milk, edible oil and wheat flour.

6. Prof. Godbole has been conferred KL Wig medal, VN Patwardhan medal, SR Naik best investigator award and Fellowship by National Academy of Medical Sciences and also Indian Academy of Neurosciences. His science has contributed significantly towards the upliftment of societal health and education. In recognition, he was appointed as Chairman of the Council for Advancement of People's Action and Rural Technology (CAPART) for states of Uttar Pradesh & Uttarakhand.



प्रो. मदन माधव गोडबोले

प्रोफेसर मदन माधव गोडबोले संजय गांधी स्नातकोत्तर चिकित्सा विज्ञान संस्थान, लखनऊ जो राष्ट्रीय महत्व का रोग परिचर्या, शैक्षणिक एवं अनुसंधान का त्रिस्तरीय संस्थान है, में मोलिक्यूर मेडीसिन एवं बायोटेक्नोलॉजी के प्रोफेसर हैं। आप आयोडीन डेफिसिएंसी डिसआर्डर की रोकथाम एवं नियंत्रण के क्षेत्र में अपने कार्यों हेतु संपूर्ण भारत में सुविख्यात हैं।

2. आपका जन्म 16 मई, 1950 को इंदौर मध्य प्रदेश में हुआ। आपने ग्वालियर में विद्यालयी एवं कॉलेज शिक्षा प्राप्त की। वर्ष 1972 में आप दिल्ली आए एवं वर्ष 1980 में अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली से आपको एंडोक्रायन बायोकेमिस्ट्री में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई।

3. आपने सामान्यत: संपूर्ण भारत में एवं विशेषत: उत्तर प्रदेश में आयोडीन की कमी के सर्वेक्षण एवं अध्ययन कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इस अनुसंधान ने आयोडीन की कमी वाले क्षेत्रों में जन्म लेने वाले बच्चों के उचित बौद्धिक एवं मस्तिष्क के न्यूरोलोजिकल विकास के लिए स्वास्थ्यप्रद आयोडीन पोषण सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे राष्ट्रीय नीति में परिवर्तन एवं आयोडीन संपूरक कार्यक्रम का क्रियान्वयन संभव हो सका। आपने उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्रों में चलाई गई नवजात शिशु थायरायड जांच कार्यक्रम के आधार पर बहुतम कार्डब्लड के लिए थायरायड हार्मोन असेज़ के आधार पर फिल्टर पेपर का देसी रूप में विकास किया एवं इसका वैधीकरण किया।

4. इसके अतिरिक्त, आपने एसजीपीजीआईएमएस में अनेक ऐसे क्षेत्रों में मूल रूप से प्रारंभिक एवं क्लिनिकल अनुसंधान किये जिन्हें प्रकाशित किया गया एवं व्यापक मान्यता मिली। आपको कठिन प्रयोगशालायी प्रयोगों को निरूपित करने में एवं उसकी मनोवैज्ञानिक सीमा के भीतर उसके परिणामों की व्याख्या करने के लिए नैदानिक प्रर्यवेक्षणों की अदभुत् एवं विलक्षण क्षमता है, जिसके परिणामस्वरूप आपने महत्वपूर्ण योगदान किये। नूतन खोजों के कारण अध्ययनों के नैदानकी संदर्भ के परिणामत:, उच्च कोटि के अंतरराष्ट्रीय जर्नलों में आपके 75 प्रकाशनों की समीक्षा की गई। एक ऐसे देश में जहां आयोडीन की कमी से कई महिलाओं एवं नवजात शिशुओं को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा, आपके अनुसंधान के फलस्वरूप भारत में बच्चों एवं माताओं का स्वस्थ जीवन संभव हो पाया क्योंकि यही बच्चे आगे चलकर भारत की आर्थिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के लिए मूल्यवान संसाधन होंगे।

5. पीएचडी छात्रों में वैज्ञानिक संस्कृति के पोषण एवं तकनीकी कर्मचारियों में कौशल उन्नयन का विषय, चार दशकों से आपके लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण रहा है। आपका दृढ़ विश्वास है कि गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान से सदैव ही सहज रूप से इसे क्षेत्र-तकनीकी के रूप में अपनाने में सहायता मिलती है। चिकित्सा एवं जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में अग्रणिम अनुसंधान में शामिल रहने के साथ-साथ आप वर्तमान में दूध, खाद्य तेल एवं गेंहू के आटे में लोहा एवं आयोडीन के स्तरों की जांच के लिए लघु टेस्ट किट्स विकसित कर रहे हैं।

6. आपको केएल विग मैडल, वी एन पटवर्धन मैडल, एस आर नायक उत्कृष्ट अन्वेषक पुरस्कार तथा राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान एवं इंडियन ऐकेडमी ऑफ सांइसेस से फैलोशिप प्राप्त हुए हैं। आपके विज्ञान से सामाजिक स्वास्थ्य एवं शिक्षा के उन्नयन हेतु व्यापक योगदान प्राप्त हुए हैं। आपके कार्यों को मान्यता देते हुए आपको उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड राज्यों के लिए कांउसिल फॉर एडवांसमेंट ऑफ पीपुल्स एक्शन एंड रूरल टेक्नोलॉजी (सीएपीएआरटी) के अध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया।